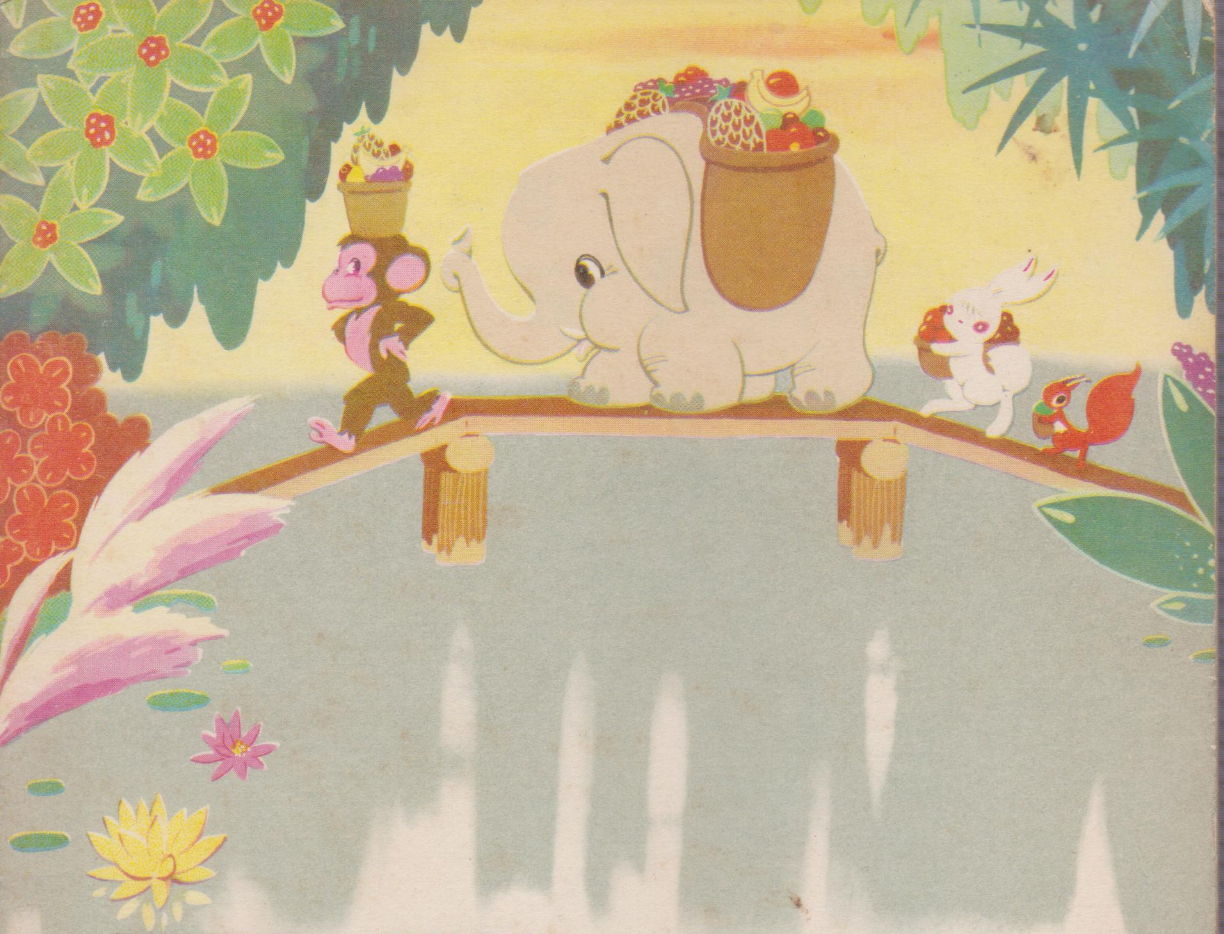
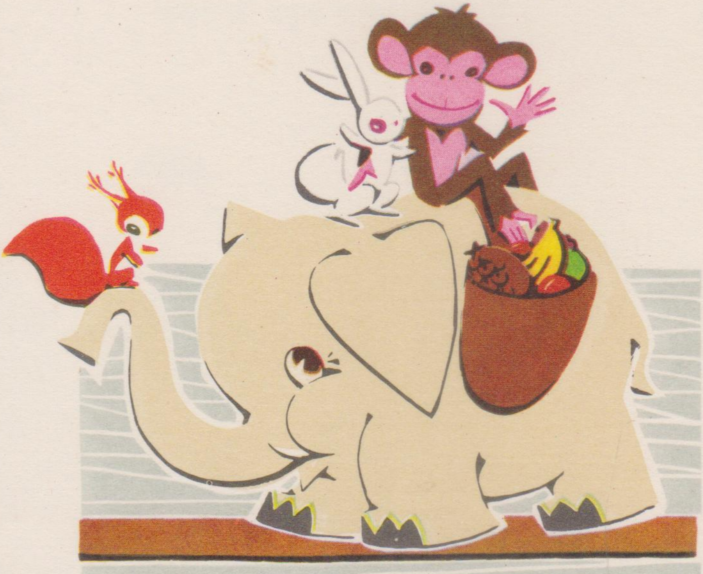


एक नए पुल का निर्माण

एक नए पुल का निर्माण

रूपान्तरकार : वान युन   चित्रकार : छन युङ-छन



विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
पेइचिङ

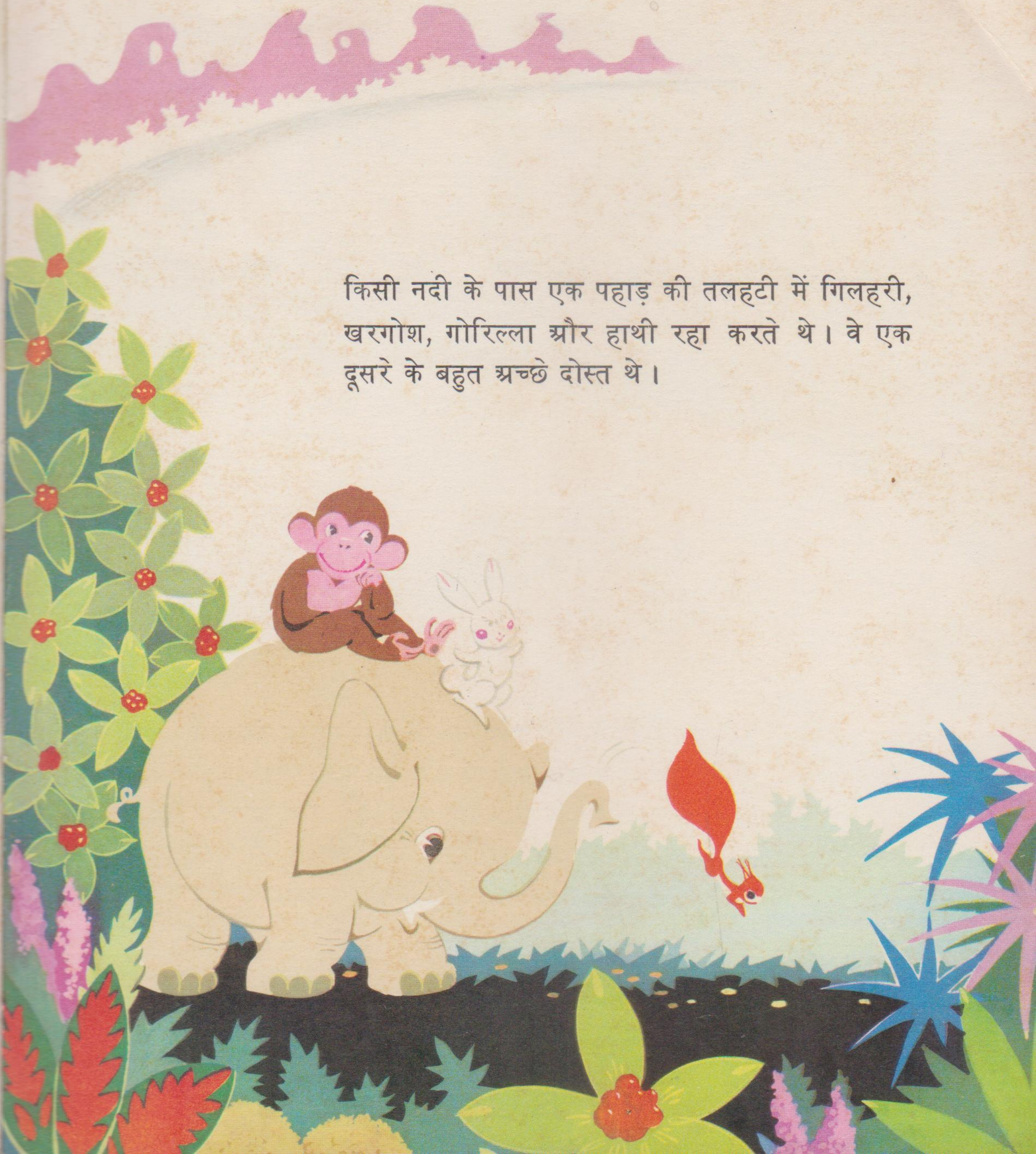
प्रथम संस्करण १९८०
द्वितीय संस्करण १९८३

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङमार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **विदेशी भाषा मुद्रणालय**
१९ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : **चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. बाक्स ३९९, पेइचिङ

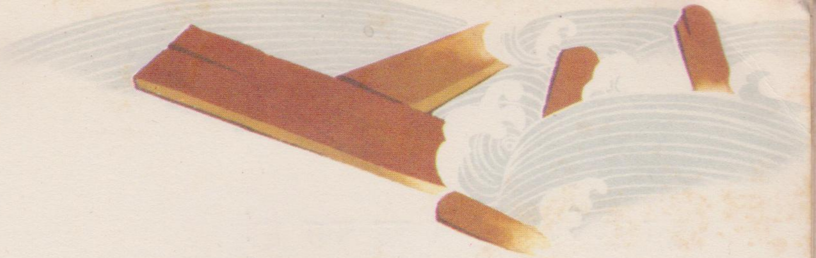
चीन लोक गणराज्य में मुद्रित



किसी नदी के पास एक पहाड़ की तलहटी में गिलहरी, खरगोश, गोरिल्ला और हाथी रहा करते थे। वे एक दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त थे।



हर साल शरद के मौसम में, वे नदी के उस पार जंगल में जाकर सर्दियों में खाने के लिए कंद, मूल और फल इकट्ठा करते। गिलहरी बड़ी होशियार व फुर्तीली तथा खरगोश बहुत चुस्त व चपल था ; गोरिल्ला भारी चीजों को उठा कर ले जा सकता था, और हाथी बड़ा समझदार था।





एक दिन सुबह, गिलहरी एक पेड़ पर चढ़ गई और उसने रोज की तरह व्यायाम करना शुरू कर दिया, "एक, दो, तीन, चार।" पेड़ के नीचे वेग से बहती हुई नदी का पानी बड़ी तेजी से ऊपर उठ रहा था। अचानक एक धमाका हुआ और नदी पर बना लकड़ी का पुल टूट गया।



"पुल टूटकर पानी में बह गया है! पुल टूट गया है!" गिलहरी पेड़ की फुनगी से चिल्लाई श्रौर नीचे कूद गई।

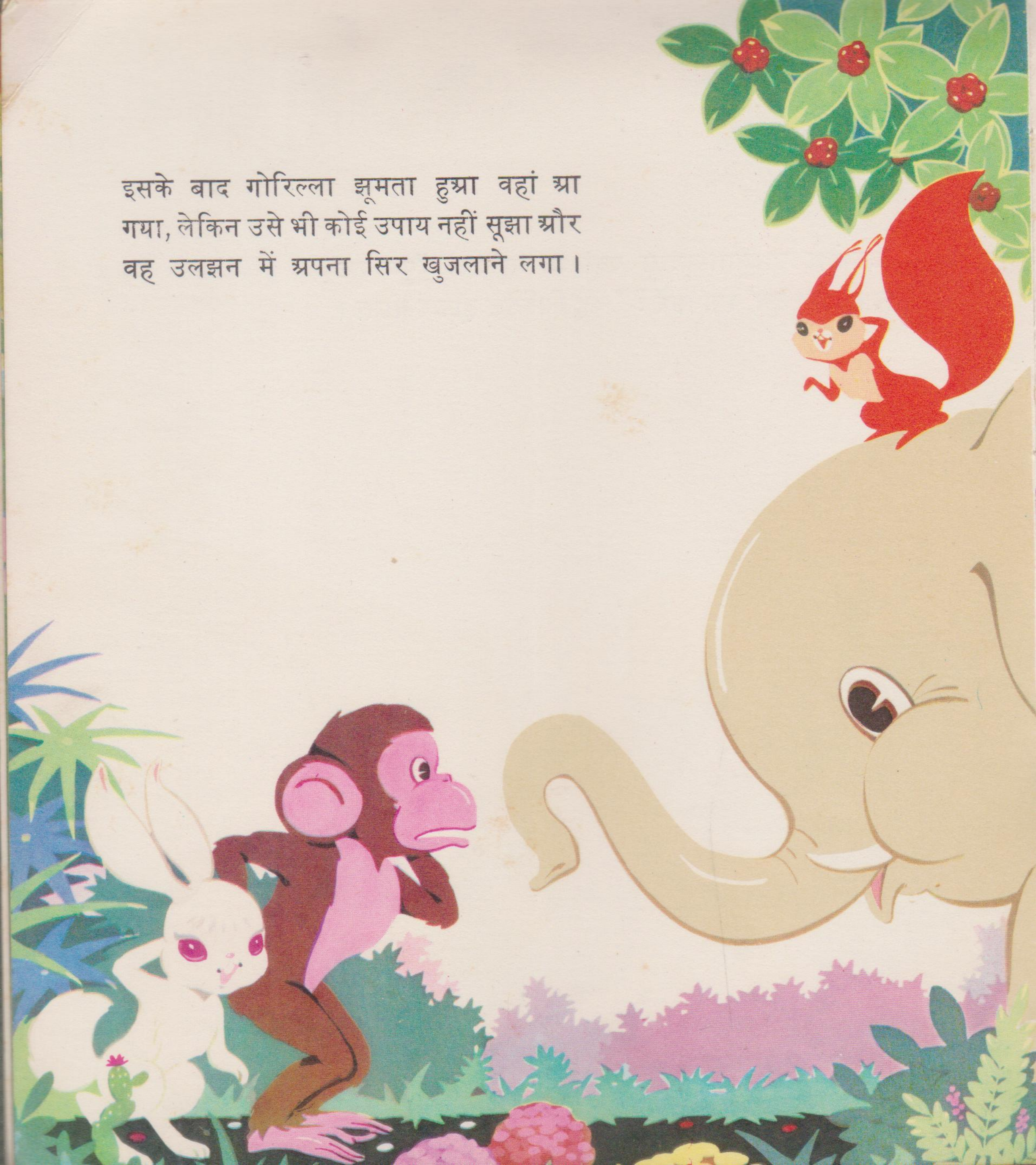




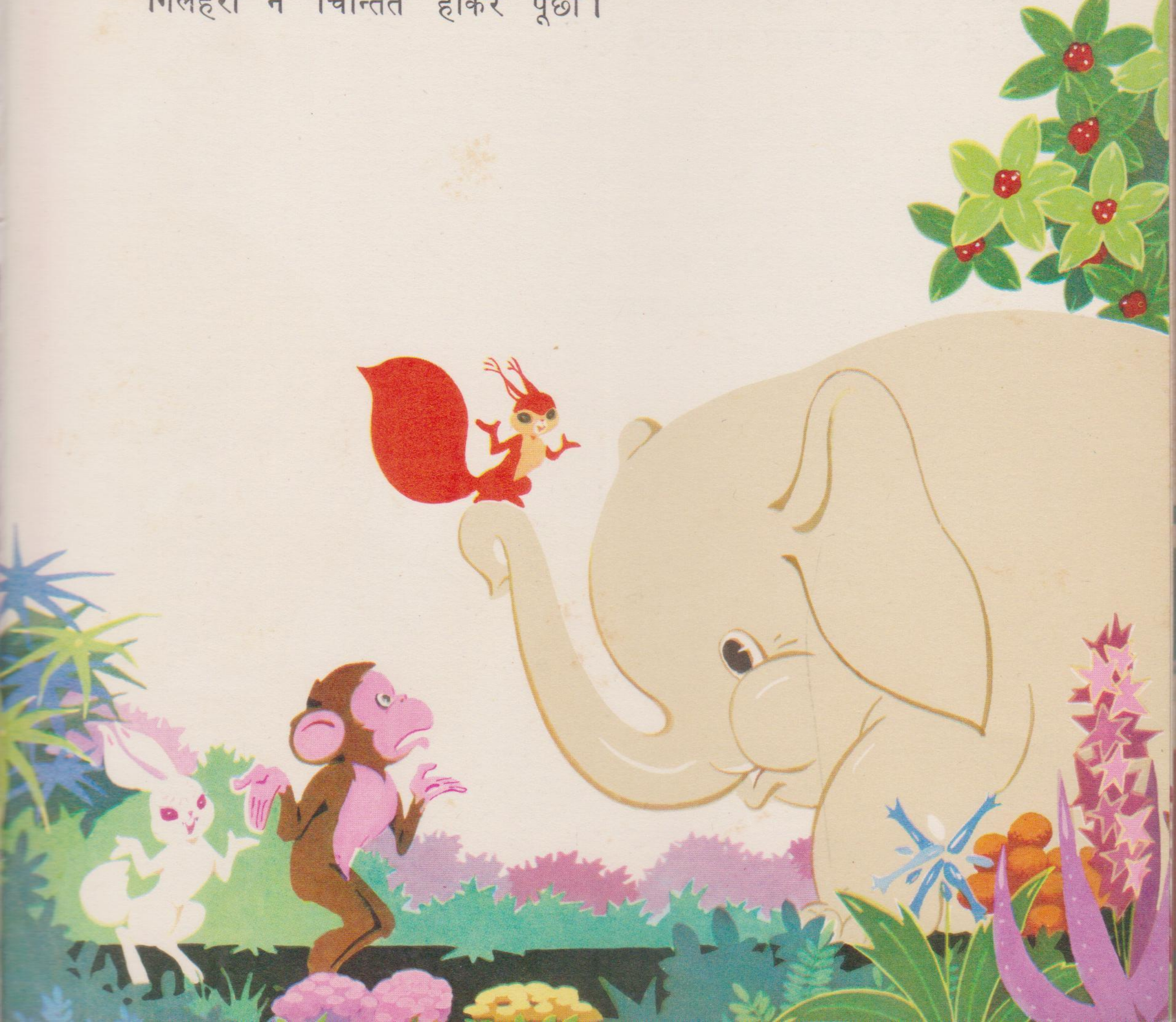
खरगोश उछलता-कूदता वहां आ पहुंचा। "पुल टूट गया, अब हम क्या करें?" वह चिन्तित होकर बोला।



इसके बाद गोरिल्ला झूमता हुआ वहां आ गया, लेकिन उसे भी कोई उपाय नहीं सूझा और वह उलझन में अपना सिर खुजलाने लगा।



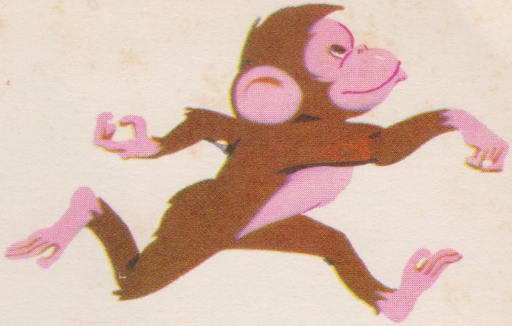
"पुल टूट जाने से हम सर्दियों के लिए फल वगैरह कैसे इकट्ठा कर सकेंगे?" गिलहरी ने चिन्तित होकर पूछा।



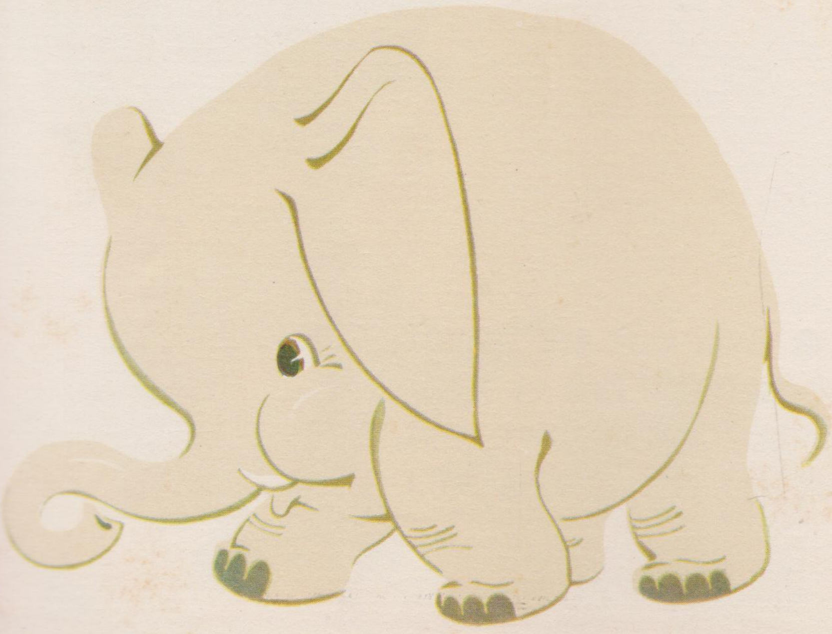
"चिन्ता मत करो," हाथी ने अपनी सूंड हिलाते हुए कहा। "यदि हम मिलकर काम करें, तो नया पुल अवश्य बना सकते हैं।"







गिलहरी रस्सा लाने के लिए घर चली गई और खरगोश टोकरियां बनाने चला गया। गोरिल्ला अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज करने चला गया तथा हाथी बल्ली लाने के लिए चल दिया।



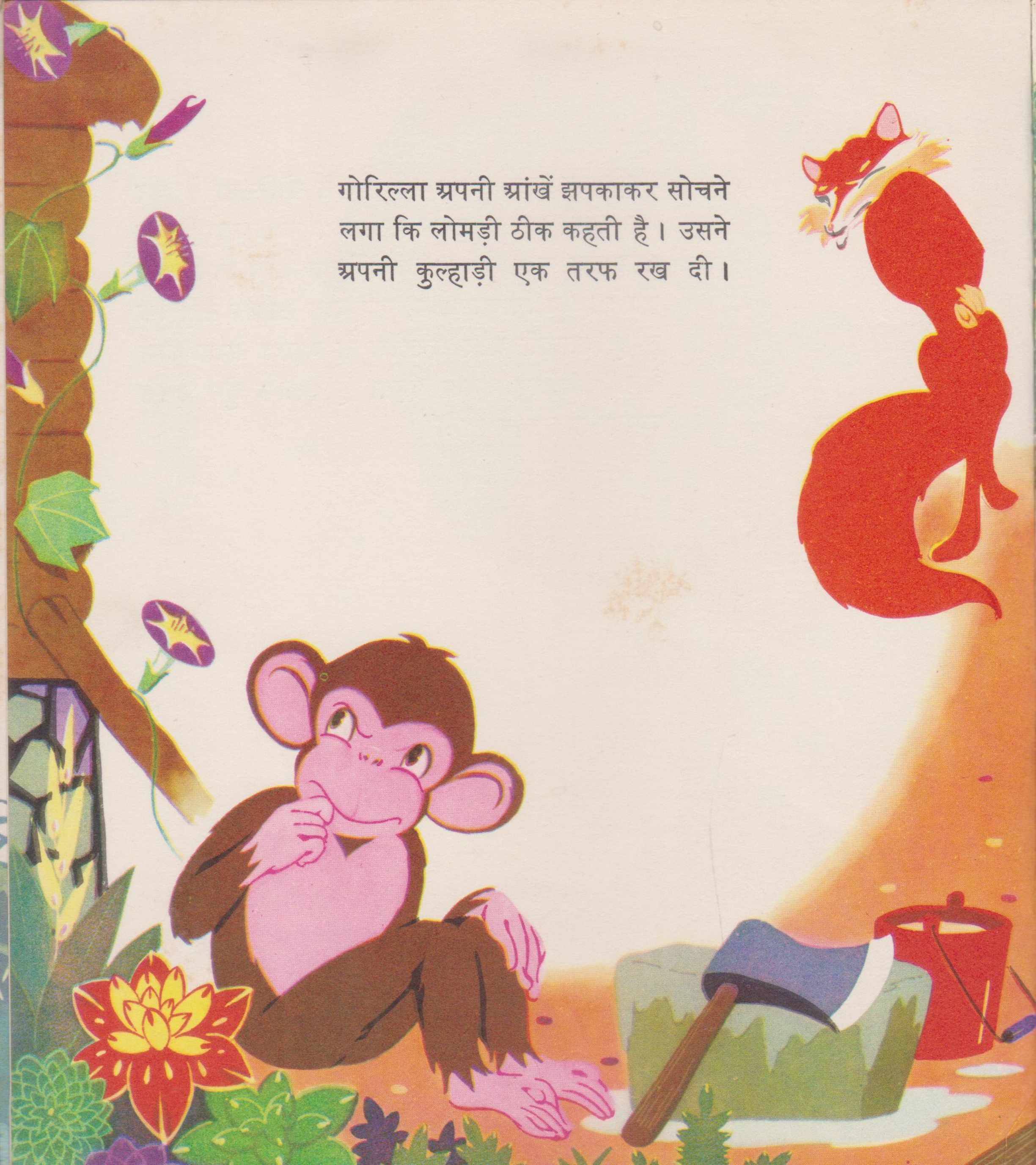




पुल के निर्माण की योजना बनाने वाले इन चारों दोस्तों की बातचीत झाड़ियों में छिपी एक लोमड़ी ने सुन ली। वह अपनी आंखें सिकोड़कर उनकी योजना को विफल करने का उपाय सोचने लगी।

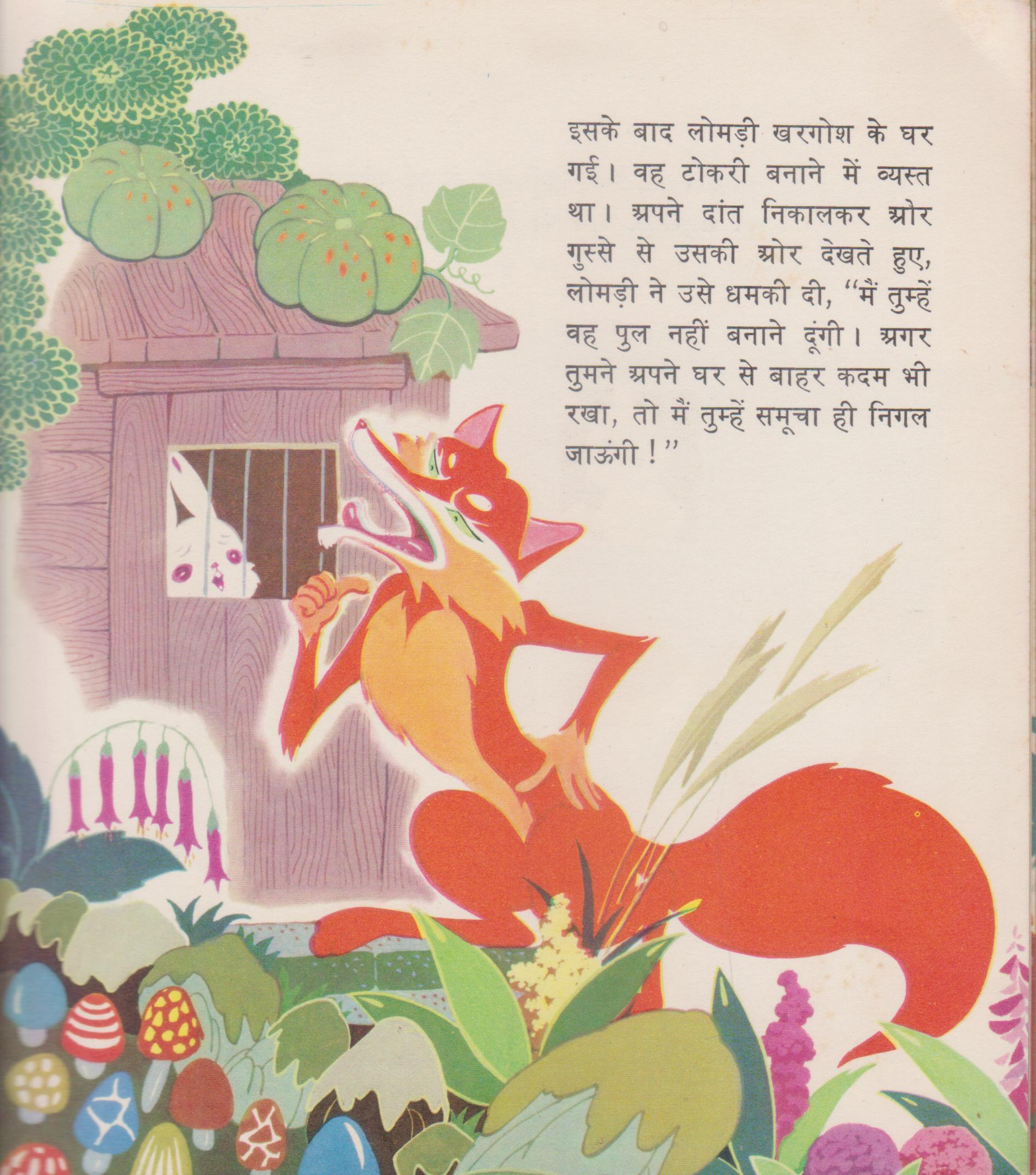
थोड़ी देर बाद, लोमड़ी चुपके से गोरिल्ला के घर आ पहुंची। वहां उसने गोरिल्ला को कुल्हाड़ी की धार तेज करते देखा। "अरे," वह खीसें निपोरकर बोली। "गोरिल्ला भैया, यह बात उचित नहीं कि तुम्हें गिलहरी और खरगोश से ज्यादा सख्त काम केवल इसलिए करना पड़ता है क्योंकि तुम उनसे ज्यादा ताकतवर हो!"



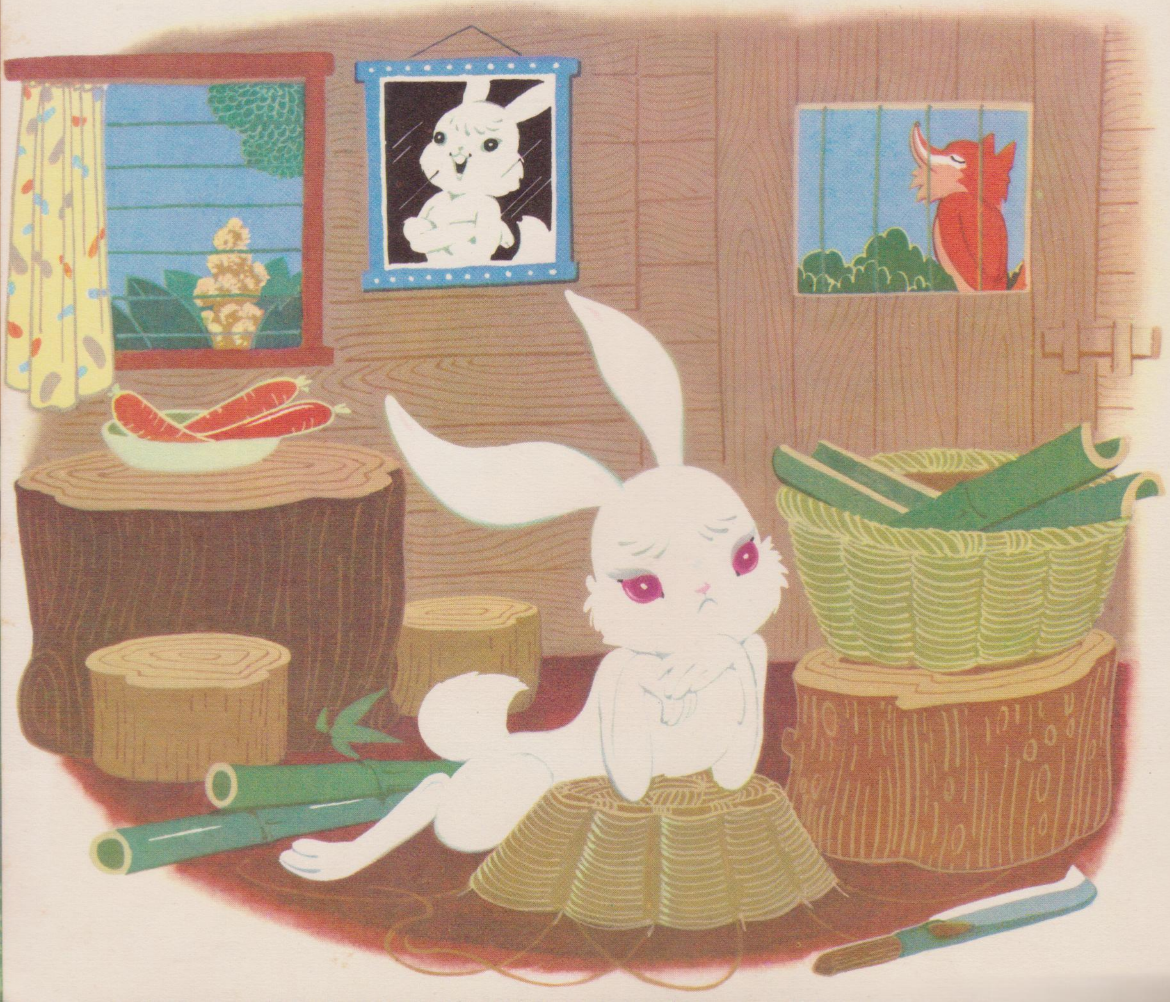


गोरिल्ला अपनी आंखें झपकाकर सोचने लगा कि लोमड़ी ठीक कहती है। उसने अपनी कुल्हाड़ी एक तरफ रख दी।

इसके बाद लोमड़ी खरगोश के घर गई। वह टोकरी बनाने में व्यस्त था। अपने दांत निकालकर और गुस्से से उसकी ओर देखते हुए, लोमड़ी ने उसे धमकी दी, "मैं तुम्हें वह पुल नहीं बनाने दूंगी। अगर तुमने अपने घर से बाहर कदम भी रखा, तो मैं तुम्हें समूचा ही निगल जाऊंगी!"

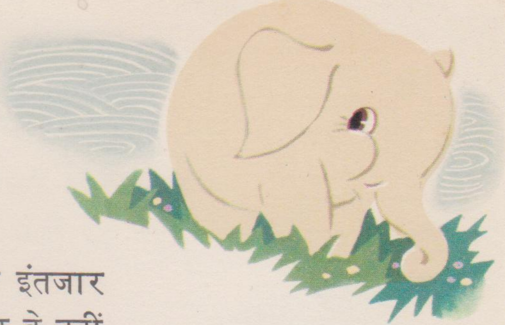


खरगोश की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और उसमें घर से बाहर जाने की हिम्मत नहीं रह गई।



जब गिलहरी रस्सा लेकर नदी के किनारे पहुंची, तो हाथी पहले से ही अपनी सूंड से एक बल्ली पकड़े वहां मौजूद था।





वे अपने बाकी दोनों दोस्तों का बहुत देर तक इंतजार करते रहे। जब सूरज ऊपर चढ़ आया और वे नहीं आए, तो गिलहरी बोली, "मैं जाकर उनकी तलाश करती हूं।" यह कहकर वह वहां से हवा हो गई।

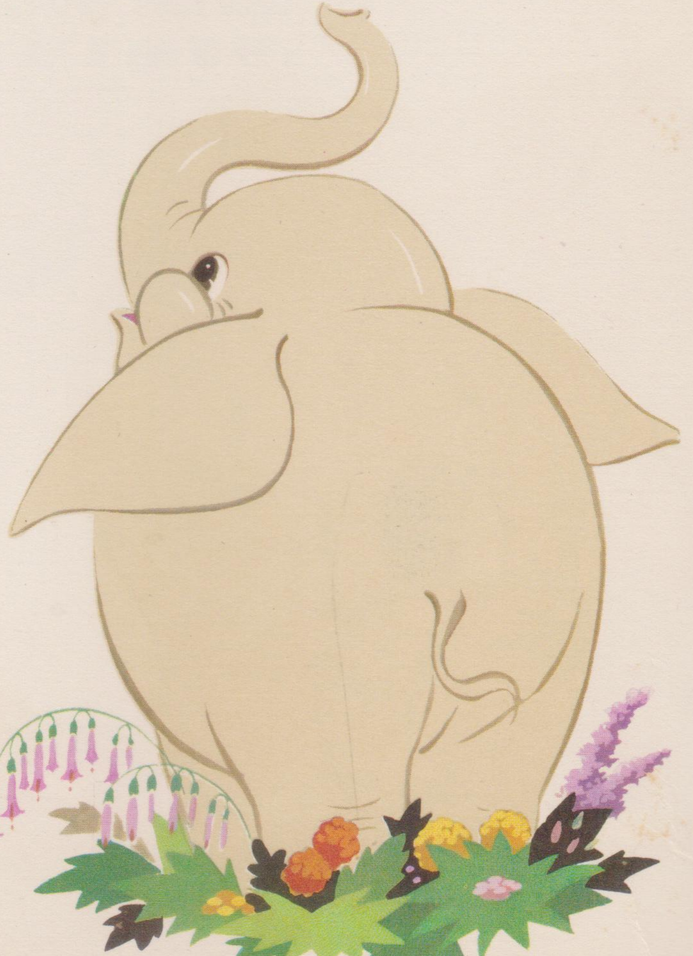


गिलहरी बहुत जल्दी ही वापस आ गई। उसने दुखी होकर हाथी से कहा, "वे दोनों नहीं आएंगे। आओ, हम स्वयं पुल बनाएं।"





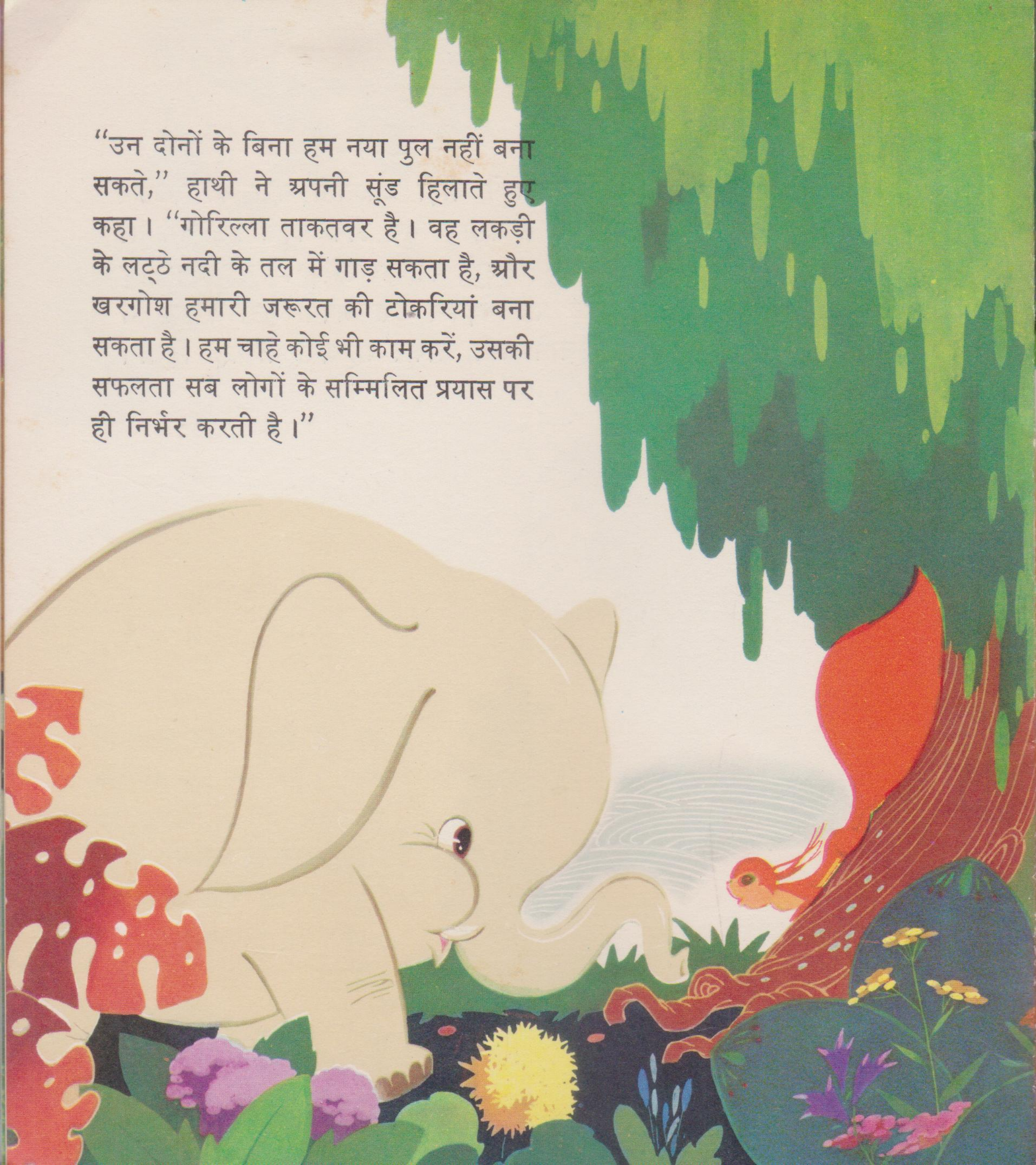
गिलहरी बड़ी फुर्ती से एक बड़े पेड़ पर चढ़ गई। उसने बड़े प्रयत्न से एक छोटी-सी टहनी तोड़कर हाथी को दी। लेकिन हाथी ने कहा कि पुल बनाने के लिए वह टहनी काम नहीं आ सकती।



गिलहरी ने चौड़ी उफनाती नदी को देखकर हाथी से कहा, "तुम ठीक कहते हो, हमें तो मजबूत लट्ठों की जरूरत है।" वह एक बड़े पेड़ पर चढ़कर उसे अपनी पूरी ताकत से हिलाने लगी, लेकिन वह जरा भी नहीं हिला।

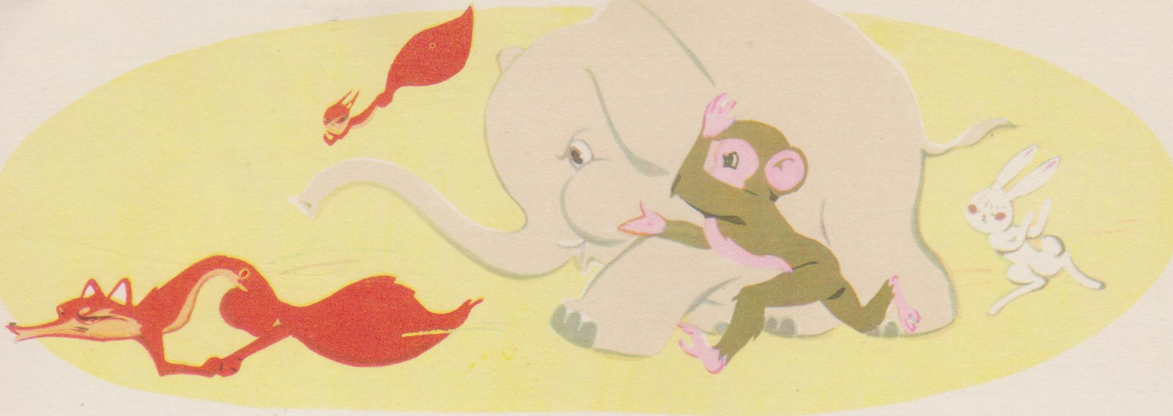


"उन दोनों के बिना हम नया पुल नहीं बना सकते," हाथी ने अपनी सूंड हिलाते हुए कहा। "गोरिल्ला ताकतवर है। वह लकड़ी के लट्ठे नदी के तल में गाड़ सकता है, और खरगोश हमारी जरूरत की टोकरियां बना सकता है। हम चाहे कोई भी काम करें, उसकी सफलता सब लोगों के सम्मिलित प्रयास पर ही निर्भर करती है।"





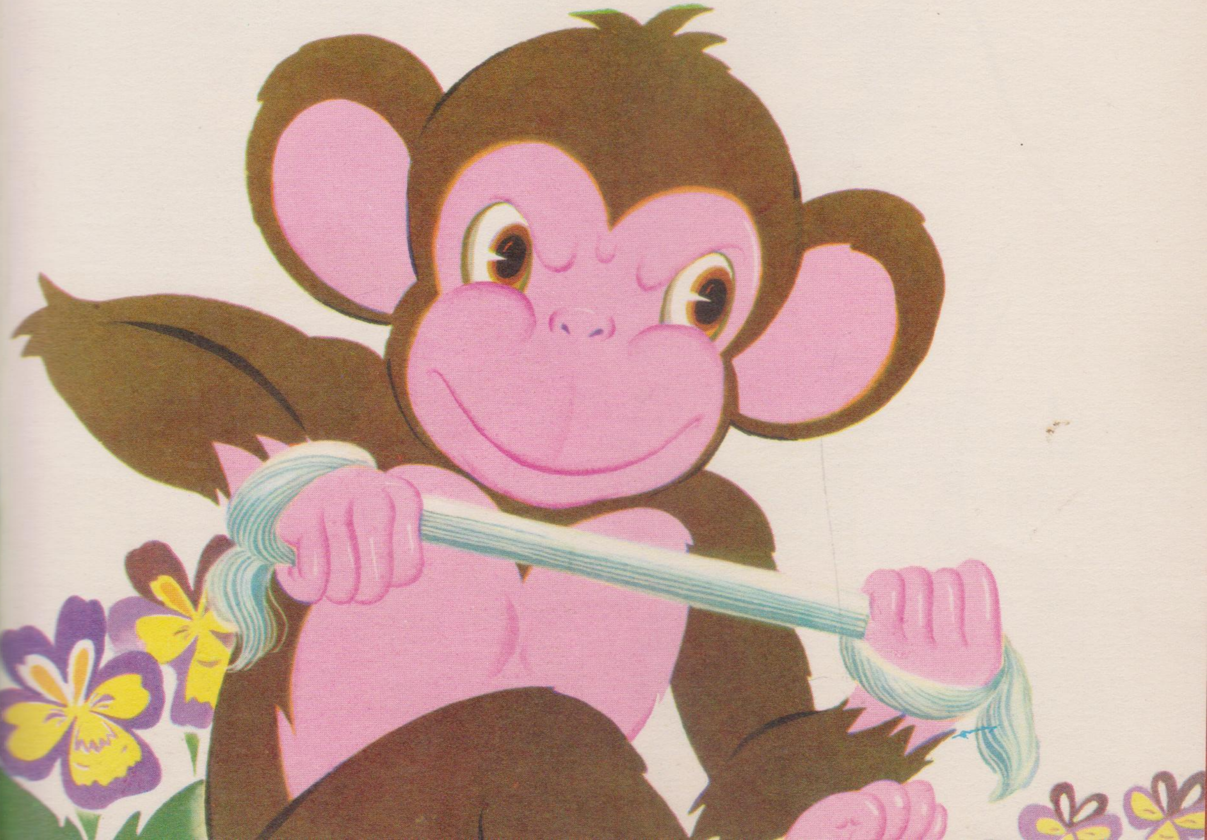
हाथी श्रौर गिलहरी खरगोश के घर गए। वहां उन्हें सारी बात मालूम हुई। "जब पिछली बार लोमड़ी ने तुम्हारे मकान पर जबरन कब्जा करने की कोशिश की थी, तब हम सब ने मिलकर उसे खदेड़ दिया था," हाथी ने कहा। "एकताबद्ध होकर हम शक्तिशाली बन जाते हैं श्रौर श्रपने किसी भी शत्रु से नहीं डरते।"



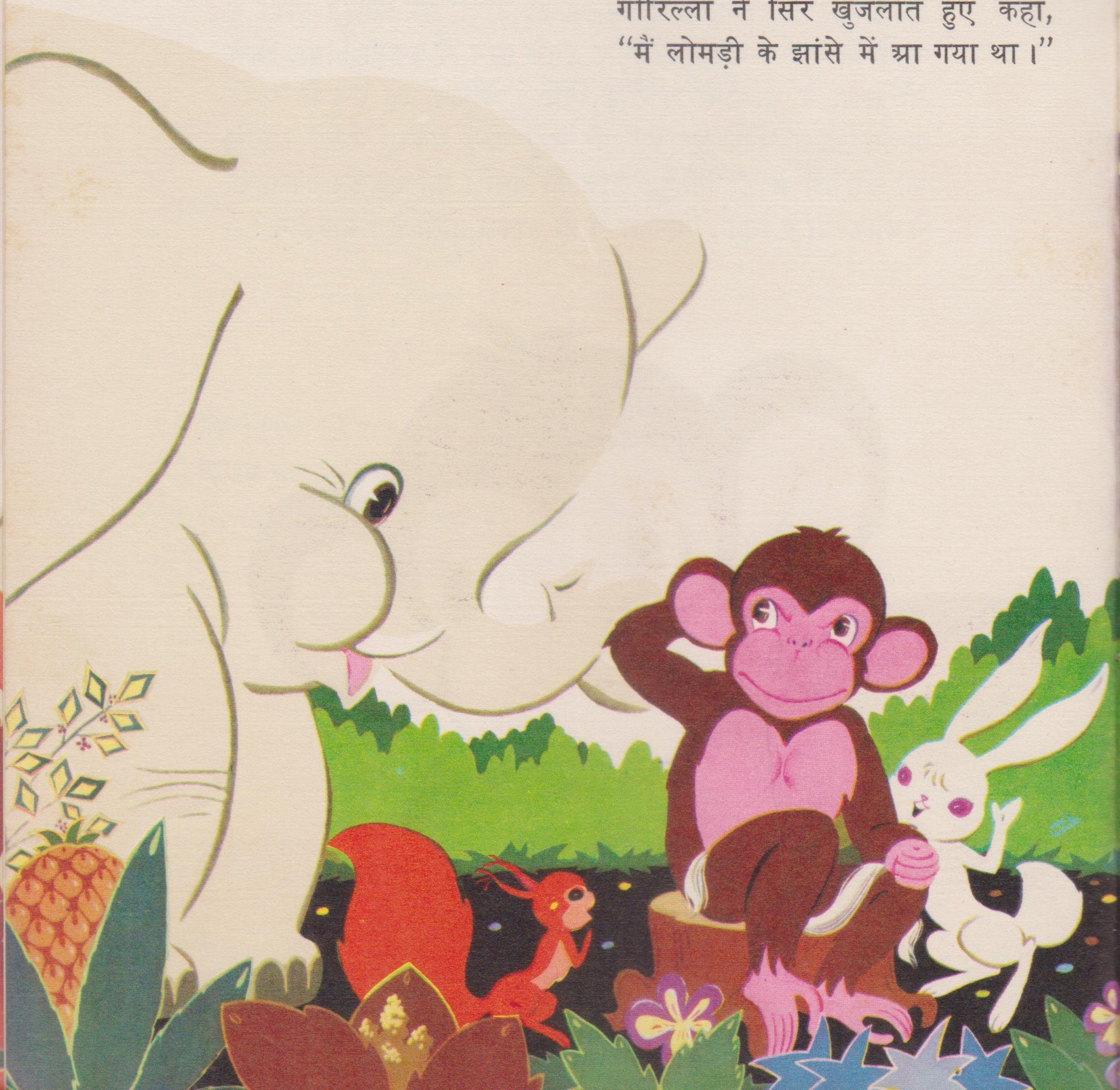
खरगोश को अब भी याद था कि उन्होंने लोमड़ी पर कैसे विजय प्राप्त की थी। "तुम ठीक कहते हो, हम सब मिलकर पुल बना सकते हैं, और लोमड़ी को हरा भी सकते हैं।" वह भावावेश में बोला।



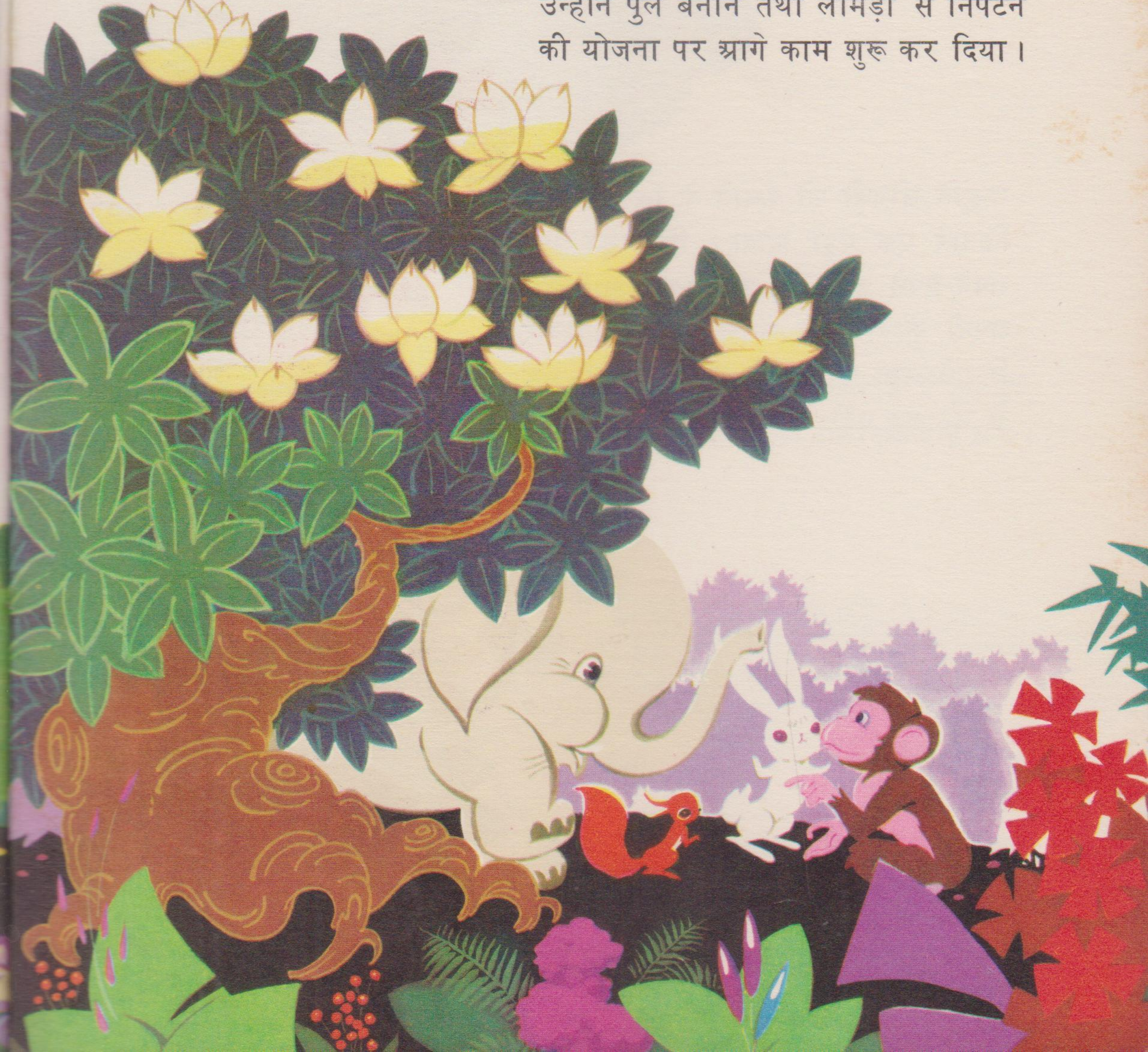
इसके बाद तीनों गोरिल्ला से मिलने उसके घर आए। हाथी ने रस्सी से एक धागा निकालकर उसके हाथ में पकड़ा दिया, जिसे गोरिल्ला ने आसानी से तोड़ दिया। लेकिन वह समूची रस्सी अपना सारा जोर लगाकर भी नहीं तोड़ सका। रस्सी तोड़ने की कोशिश में उसका मुंह लाल हो गया। यह देखकर गिलहरी ने गोरिल्ला से कहा, "एकता में ही ताकत होती है। सच है न?"



गोरिल्ला ने सिर खुजलाते हुए कहा, "मैं लोमड़ी के झांसे में आ गया था।"



चारों दोस्त फिर से मिलकर काम करने लगे। उन्होंने पुल बनाने तथा लोमड़ी से निपटने की योजना पर आगे काम शुरू कर दिया।

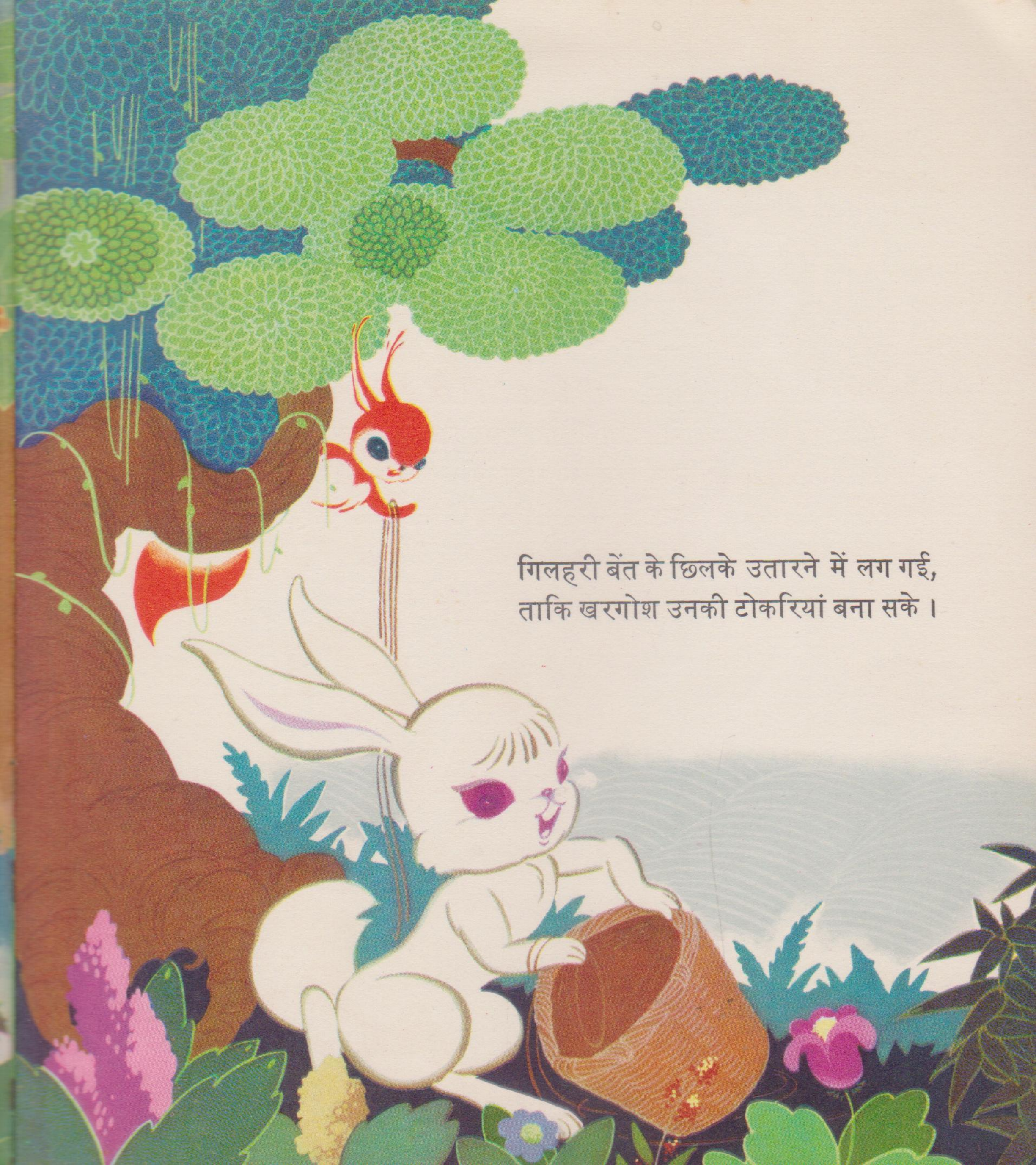




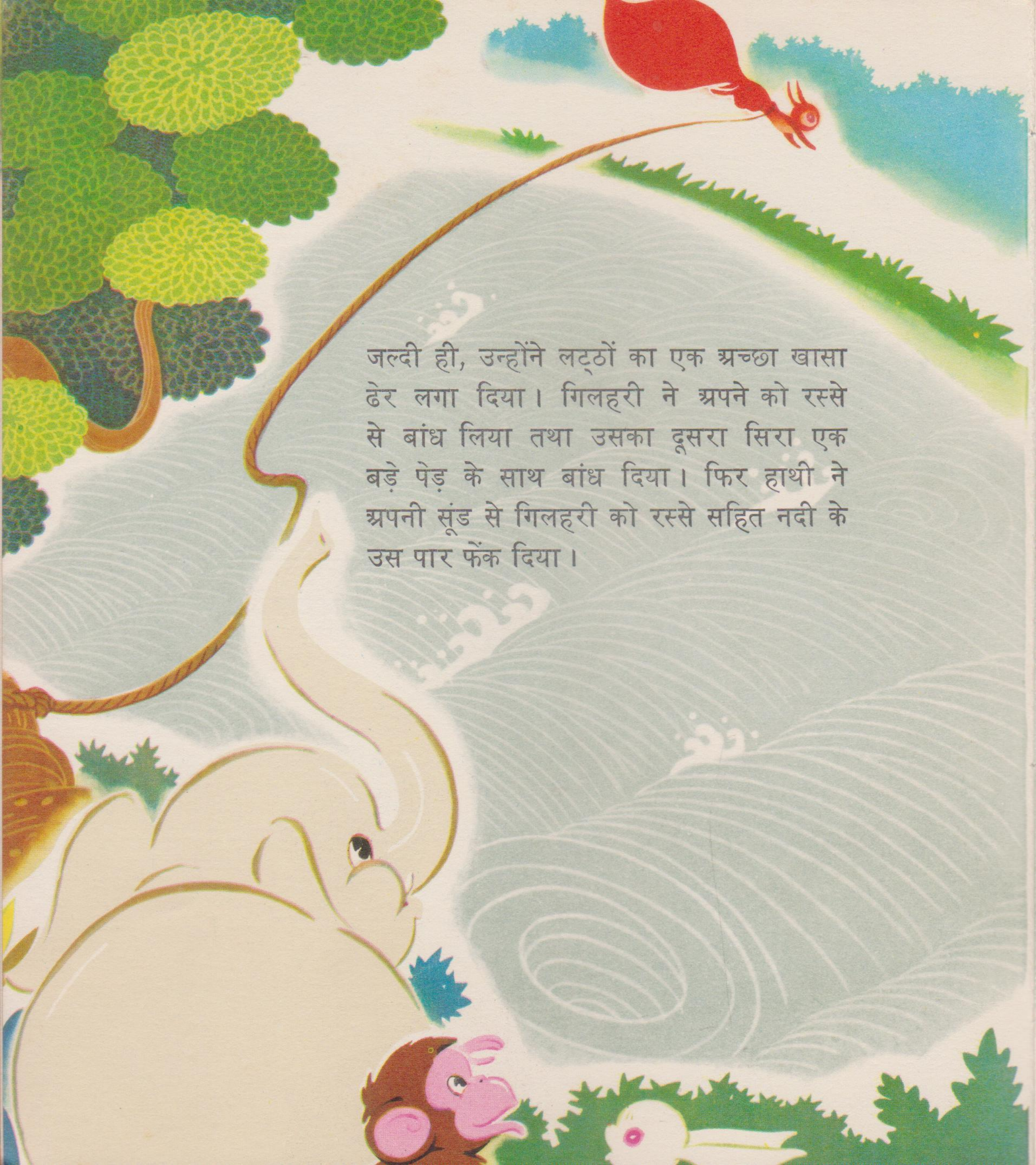
उन्होंने लोमड़ी को फंसाने के लिए नदी के किनारे एक गड्ढा खोदा। फिर हर एक अपने-अपने काम में लग गया। गोरिल्ला अपनी कुल्हाड़ी से जंगल के पेड़ काटकर गिराने लगा और हाथी उनको अपनी सूंड से उठाकर नदी के किनारे पहुंचाने लगा।







गिलहरी बेंत के छिलके उतारने में लग गई,
ताकि खरगोश उनकी टोकरियां बना सके ।



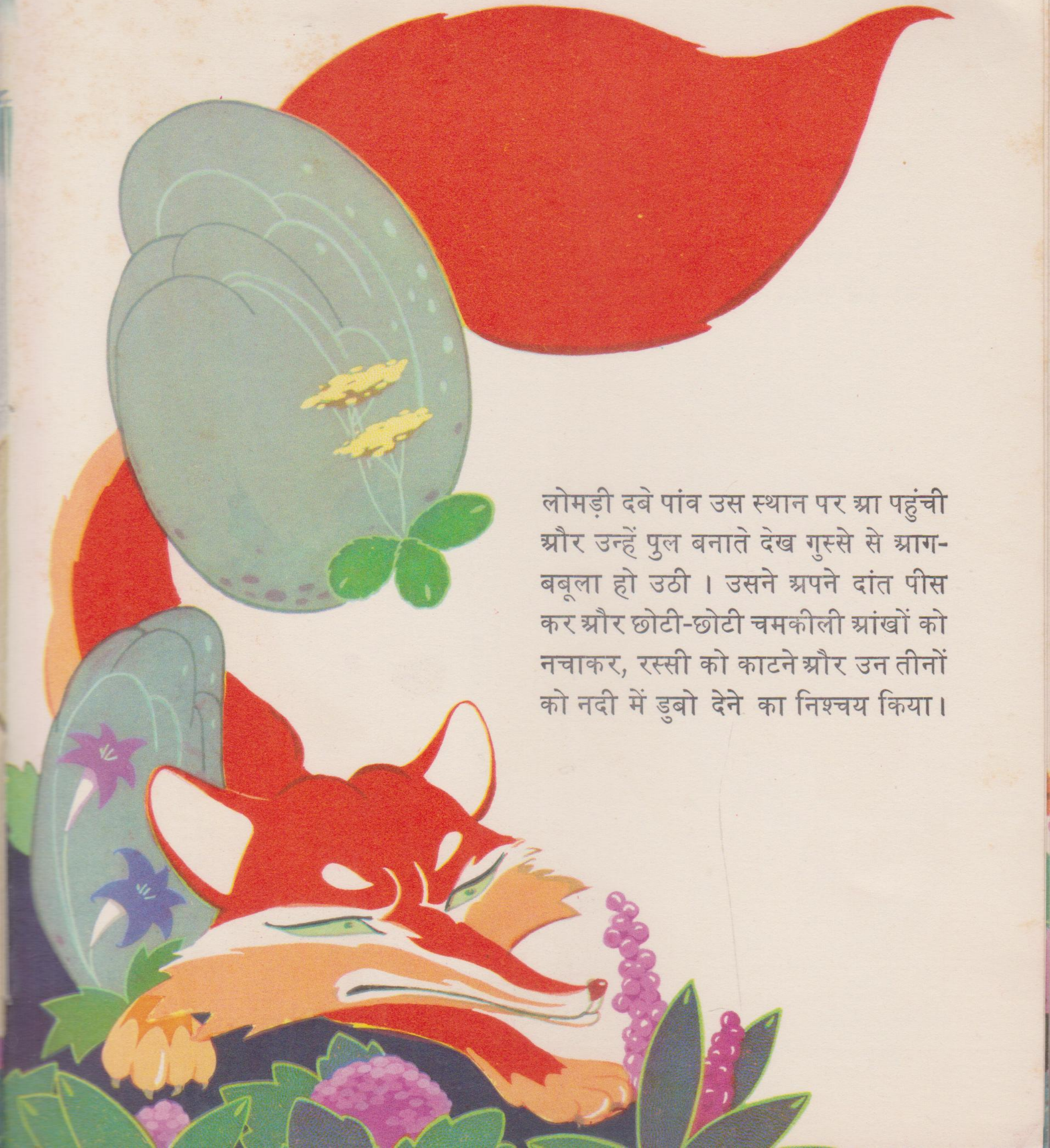
जल्दी ही, उन्होंने लट्ठों का एक अच्छा खासा ढेर लगा दिया। गिलहरी ने अपने को रस्से से बांध लिया तथा उसका दूसरा सिरा एक बड़े पेड़ के साथ बांध दिया। फिर हाथी ने अपनी सूंड से गिलहरी को रस्से सहित नदी के उस पार फेंक दिया।



नदी के उस पार पहुंचकर, गिलहरी ने अपनी कमर से रस्सा खोल लिया और उसे नदी के किनारे खड़े एक पेड़ से बांध दिया। फिर उसने तीन टोकरियां रस्से के सहारे लटका दीं। गिलहरी, खरगोश और गोरिल्ला उन टोकरियों में बैठकर पुल बनाने का काम करने लगे।

गोरिल्ला ने लकड़ी के लट्ठों को नदी के तल में गाड़ना शुरू कर दिया। हाथी लट्ठों के ऊपर बिछाने के लिए पटरे ले जाने लगा। अपना काम करने के साथ-साथ वह यह भी देखता जाता था कि आसपास कहीं लोमड़ी तो नहीं है। गिलहरी और खरगोश लट्ठों पर पटरे लगाने लगे।





लोमड़ी दबे पांव उस स्थान पर आ पहुंची और उन्हें पुल बनाते देख गुस्से से आग-बबूला हो उठी । उसने अपने दांत पीस कर और छोटी-छोटी चमकीली आंखों को नचाकर, रस्सी को काटने और उन तीनों को नदी में डुबो देने का निश्चय किया ।

हाथी एक और लट्ठा लाने के लिए वहां से चला गया। लोमड़ी रस्सा काटने के लिए उछली, लेकिन उस गड्ढे में जा गिरी जो उसे फंसाने के लिए खोदा गया था।





"लोमड़ी गड्ढे में फंस गई है, लोमड़ी गड्ढे में फंस गई है!" गिलहरी, खरगोश और गोरिल्ला खुशी से चिल्ला पड़े।

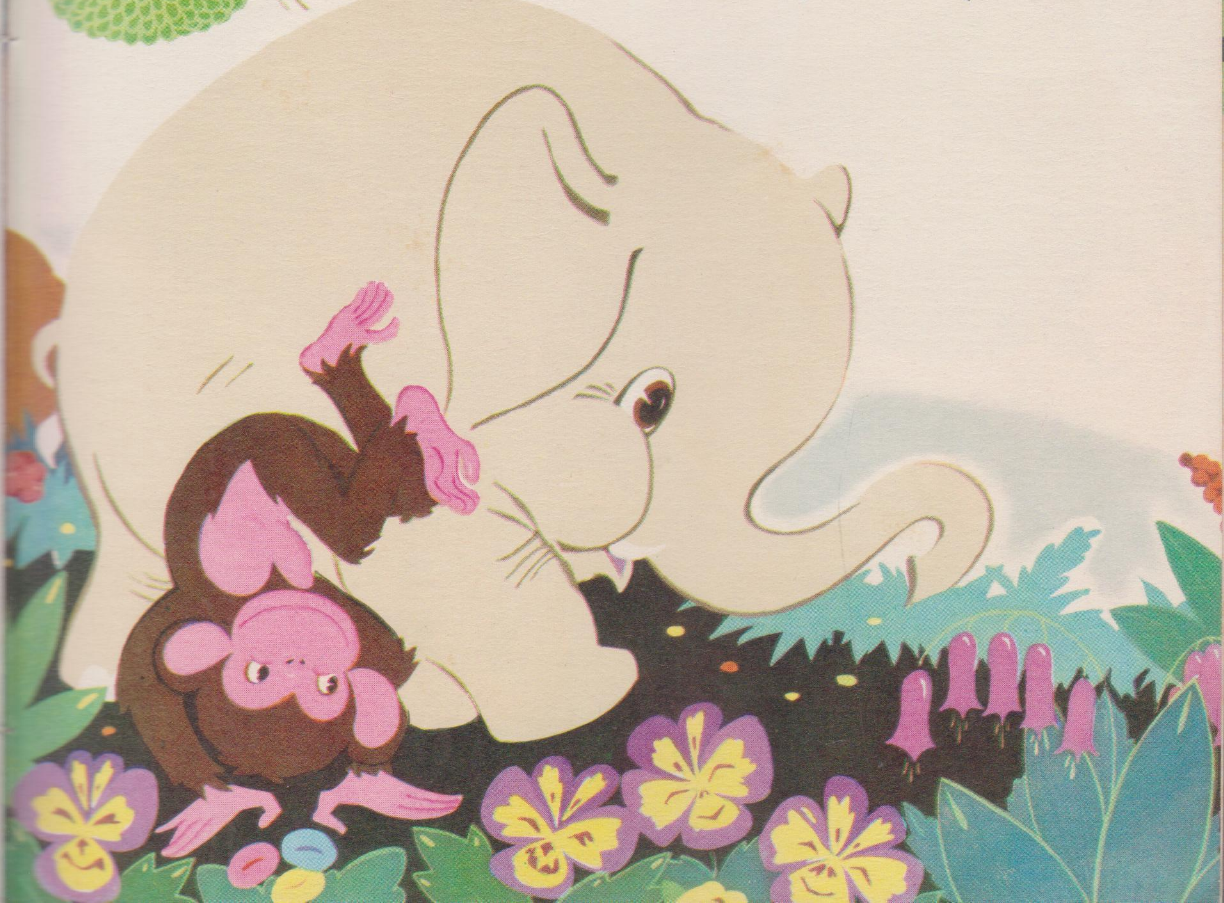


हाथी वापस आया और गड्ढे के पास गया। फिर उसने लोमड़ी को अपनी सूंड में लपेटकर ऊपर उछाल दिया। लोमड़ी ने निकल भागने की कोशिश की, लेकिन पानी में डूब मरने के अलावा उसके लिए सभी रास्ते बन्द हो चुके थे।



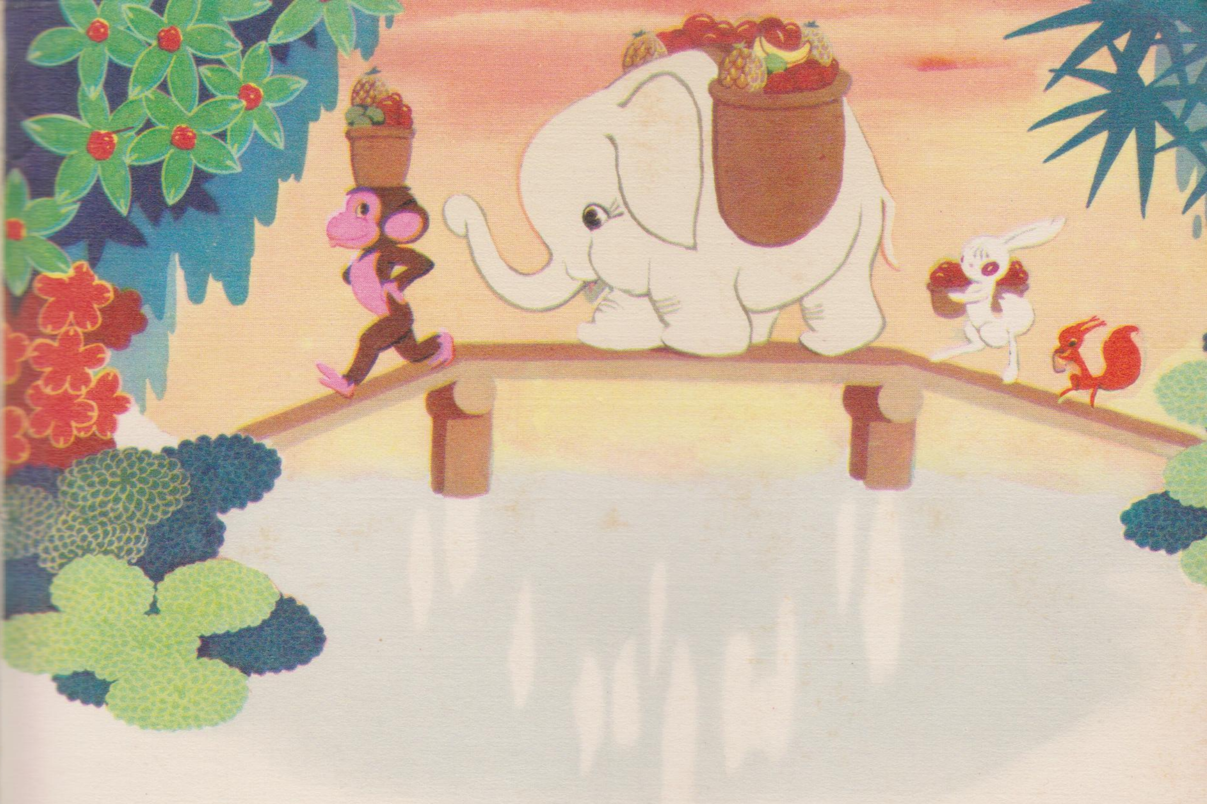


चारों दोस्तों की खुशी का ठिकाना न रहा। गिलहरी तालियां बजाने लगी, खरगोश ने फुदकना शुरू कर दिया और हाथी अपनी सूंड लहराने लगा। गोरिल्ला भी उनके साथ ठहाका लगाकर हंसने लगा।



चारों दोस्तों ने मिलकर बड़ी मेहनत से काम किया, जिसके फलस्वरूप एक नया पुल बनकर तैयार हो गया।





अहा, जरा देखो, कितना सुन्दर दृश्य है ! डूबते सूरज की लाली छाई हुई है और गिलहरी, खरगोश, गोरिल्ला तथा हाथी नए पुल को पार कर रहे हैं। उनकी टोकरियां सर्दियों के लिए इकट्ठा किए गए फलों और गिरियों से भरी हुई हैं।